© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 02 | January – March 2018

माघकृत– शिशुपालवध में रैवतक पर्वत वर्णन

सीमा रानी,शोध छात्रा ,कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

सारांशः–

संस्कृत के रीत–ग्रन्थों में ऋतु, वन, सरिता और पर्वतों के वर्णन महाकाव्य के अनिवार्य अंग माने गये हैं। प्रकृति–वर्णन को महाकाव्य में आवश्यक मानने के कारण संस्कृत–साहित्य में इसका प्राचुर्य होना स्वाभाविक है। माघकृत– शिशुपाल–वध भी एक महाकाव्य है जो बहत्त्रयी–महाकाव्यों में से एक है, जिसमें महाभारत की सुप्रसिद्ध चेदि नरेश की कथा का वर्णन किया गया है। महाकवि माघ ने चतुर्थ सर्ग में रैवतक–पर्वत के सौन्दर्य और भगवान कृष्ण के वन–विहार तथा जलक्रिड़ा के वर्णन में अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन इस प्रकार किया है।

(मुख्य शब्दः– महाकाव्य, रैवतक, स्वर्णमय, औषधी)

महाकवि माघ ने शिशुपाल–वध के प्रारम्भ में देवराज इन्द्र के द्वारा संदेशवाहक नारद जी को श्री कृष्ण के पास भेजते हैं और वे शिशुपाल के अत्याचारों के बारे में बताते हैं। इस कुछ समय बाद पाण्डवों की ओर से राजसूय यज्ञ का निमन्त्रण आता है। भगवान् श्रीकृष्ण, बलराम और चाचा उद्धव ने राजसूय यज्ञ में भाग लेने के लिए प्रस्थान किया, कुछ दूर चलने के बाद उन्हें मार्ग में रैवतक–पर्वत दिखाई दिया। स्वर्ण श्रृंगों से सुशोभित रैवतक की अपूर्व सुन्दरता ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। श्रीकृष्ण ने उस पर्वत को अनेक बार देखा था फिर भी उसने उनके मन को मोह लिया–

'दृष्टोऽपि शैलः स मुहुर्मरारेरपूर्ववद्विस्मयमाततान।
क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।।'

(शिशुपाल वध 4/17)

नीलमणियों से मण्डित शिलाओं से विभूषित यह रैवतक है या पृथ्वी फोड़कर पाताल लोक से निकला हुआ नागों का निःश्वास धूम है जो उरगों की मस्तक मणियाँ भी साथ में समेटे लाया है? और चोटियों पर चढ़कर बैठे हुए ये मेघ–समूह क्या सूर्य का मार्ग रोक लेने की तैयारी में हैं?

वेदों ने भगवान् को '**सहस्त्रशीर्षः पुरुष सहस्त्र क्षःसहस्त्रपात**' कहा है। कहीं यह पर्वत सहस्त्र चोटियों को सिर और पास–पड़ोस बिखरी हुई सहस्त्रों छोटी पहाड़ियों को पैर और सूर्य–चन्द्र को नेत्र बनाकर भगवान की नकल तो नहीं उतार रहा? किन्तु इसने तो अर्धनारीश्वर का ही रूप बना लिया। तभी न धुली हुई सफेद साड़ियों के आधे भाग में बरसते हुए श्वेत मेघ लिपटा लिये हैं और आधा भाग अनावृत छोड़ दिया है। ओर–

''छायां निजस्त्री चटुलालसानाम् मदेन किंचिच्चटुलालसानाम्।
कुर्वाणमुलि×जलजात– पत्रैर्विहंगमानां जलजात पात्रैः।''

(शिशुपाल वध 4/6)

मधु पी–पीकर मस्त और अलसाये हुए पक्षी अपने पंखों से इस पर्वत पर छाया कर रहे हैं। ये पक्षी अपनी प्रियतमाओं के साथ क्रीड़ा करने में मग्न हैं। मीठी–मीठी बातों से उनका मन बहला रहे हैं।

''अखिद्यतासन्नमुदग्रतापं रविं दधानेऽप्यरबिन्द धाने।
भृङ् गावलिर्यस्य तटे निपीतरसा नमत्तमरसा न मत्ता।''

(शिशुपाल वध 4/12)

चोटी ऊँची होने के कारण सूर्य पर्वत के बहुत समीप रहता है, इसलिए उस पर धूप बहुत तेज पड़ती है, फिर भी उस पर विचरण करने वाली भौंवली को कष्ट नहीं होता। वह लाल कमलों के कोशों पर बैठकर आनन्द से मधु पीती हुई धूप को भूल ही जाती हैं।

ऐसा लगता है कि भगवान् कृष्ण का सारथी उनसे अधिक यथार्थदर्शी था। कवि ने जहां रैवतक

की प्रशंसा में श्रीकृष्ण के मुख से उत्प्रेक्षा और यमकों से भरी कल्पना की उड़ानों की सृष्टि करायी है, वहां दारूक के हाथों चित्रकार के समान कुछ सुन्दर चित्र–प्रस्तुत किये हैं। दारूक पर्वत को देखकर आश्चर्य मुग्ध हो उठता है। सन्ध्या समय उसने पर्वत की जो शोभा देखी वह सचमुच बड़ी आकर्षक थी–

''उदयति विततोर्ध्व रश्मिरज्जा वहि मरूचौ हिमधाम्नियति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टादृय– परिवारित वारणेन्द्र लीलाम्।''

(शिशुपाल वध 4/20)

एक ओर डोरी–जैसी किरणें फैलाए चन्द्रमा निकल रहा था और दूसरी ओर सूर्य अस्ताचल को जा रहा था। दोनों के सुनहले बिम्ब दो दिशाओं में भास्वर हो रहे थे। दोनों के बीच में काली–काली चोटियों वाला रैवतक विराजमान था। ऐसा लगता था, जैसे हाथी की पीठ पर दोनों ओर दो घण्टे लटक रहे हो। यह भी चित्र क्या कम मनोरम है–

पर्वत पर कहीं–कहीं बादल छाये हैं। इन बादलों के उमड़ने से चातकों के मन में पानी बरसने की आशा बंध गयी है और उन्होंने अपना क्रन्दन बन्द कर दिया है। बिजली की चमक ठीक वैसी ही है, जैसा कि उनके श्रृंगों पर चमकता हुआ सोना। वह सुवर्ण बिजली के कौंधने से चमक उठता है। जहाँ बादल छाये रहते हैं, वहां भूमि मलिन और जहां सूर्य चमकता है, वहाँ पीली दिखाई देती है।

रैवतक–पर्वत पर स्फाटिक पत्थर भी हैं और नीलमणि–शिलाएं भी। उनके सम्पर्क के गिरने वाली नदियाँ ऐसी प्रतीत होती हैं, जैसे यमुना का सम्पर्क पाकर गंगा। सन्ध्या–समय जब भाग्य के प्रभाव से सूर्य की तेजसम्पत्ति नष्ट होने लगती है, और वह पुनरभ्युदय की आशा से कहीं कुछ समय के लिए छिपने चल देता है, उस समय यह अपनी सम्पत्ति अपने विश्वास–पात्र के पास निक्षिप्त कर देना चाहता है। यह सम्पत्ति है उसकी किरणें। वह इन किरणों को ओषधियों और वनस्पतियों के पास रख देता है। इस प्रकार वनस्पतियां सूर्य पत्नीवत् आचरण करती है। औषधियों के रात्रि में चमकने का वर्णन अन्य कवियों ने भी किया है। कालिदास ने कुमार सम्भव में कहा है–

'भवन्ति यत्रौषधयो रजन्यामतैलपूराः सूरतप्रदीपाः।'

अर्थात् चमकती हुई औषधियाँ हिमालय पर सिद्ध गणों के सूरत–प्रदीप का काम देती है। इन दीयों की विशेषता यह है कि इसमें तेल नहीं डालना पड़ता।

माघ ने रैवतक के मणिमय होने और सुवर्णमत् होने की चर्चा बार–बार की है। सम्भवतः यह कवि–परम्परा वंश किया गया है। सुमेरू के हिमाच्छदित होने से प्रातः और सायं पड़ने वाली सूर्य–प्रथा उसे स्वर्णमय बना देती है। जिन लोगों ने दार्जिलिंग की चोटी पर खड़े होकर उदीपमान सूर्य का सौन्दर्य देखा है, वे इसकी कल्पना कर सकते हैं। कालिदास ने भी हिमालय वर्णन के प्रसंग में कहा है–

'यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं मेरौ स्थिति दोग्धरि दोहदक्षे।
भास्वन्ति रत्नानि महौषधींश्च पृथ्यूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्।।'

(कुमारसम्भव)

समस्त पर्वतों ने हिमाचल को बछड़ा और मेरू पर्वत को दुहने वाला बनाकर पृथ्वी से भास्वान् रत्न और महती औषधियां दुहली। माघ के रैवतक–वर्णन का एक बड़ा भाग रैवतक स्वर्ग की विभूति के वर्णन ने ले लिया है–

'व्योमस्पृशः प्रथयता कलः धौतभितीः।'

(शिशुपाल वध 4/31)

'मरकतमयमेदिनीषु भानोः'

(शिशुपाल वध 4/56)

पर कवि केवल विभूति–वर्णन में ही नहीं डूब गया और न उस पर बिहार करने वाले विलासी यक्षों और किन्नरों के कामकेलि वर्णन में ही। उसकी दृष्टि प्रकृति की स्वभाव–चेष्टाओं पर भी समान रूप से रही है। जैसे–

'विहगा; कदम्बसुरभाविह गाः कलयन्त्यनु क्षणमनेकलयम्।

भ्रमयन्नुपैति मुहुरभ्रमयं पवनश्च धूत–नवनीपवनः।'

(शिशुपाल वध 4/36)

पर्वत पर कदम्ब के वृक्ष फूले हुए हैं। पक्षी उनकी सुगन्ध से मस्त होकर आनन्द के साथ तरह–तरह की लय में गीत अलापते हैं और वायु कदम्ब–वृक्षों को बार–बार झकझोरती हुई चल रही है। वायु के पीछे–पीछे बादल चले आते हैं और पर्वत के ताप को शान्त करते हैं।

कवि माघ ने रैवतक–पर्वत पर रहने वाले अश्वमुखों और किन्नरों की चर्चा भी की है–

'विम्बोष्ठं बहु मनुते तुरैंवक्त्रश्चुम्बन्तं मुखमिह किन्नरं प्रिमायाः।'

(शिशुपाल वध 4/38)

बेचारा तुरंगमुख अपने शरीर की बनावट के कारण उक्त क्रिया में असमर्थ है। वह किन्नर को देख कर केवल इसके भाग्य को सराह कर ही रह जाता है।

माघ ने कल्पनाओं के साथ–साथ रैवतक के वर्णन में यमक का खूब आश्रय लिया है। कवि ने जितना ध्यान काव्य के बाह्य सौन्दर्य की ओर दिया है, उतना आभ्यन्तर सौन्दर्य की ओर नहीं। आभ्यन्तरिक वर्णन में अनुभूति की मात्रा भी कम है। ऐसा लगता है कि कवि ने रैवतक कभी देखा नहीं। हिमालय के वर्णन को पढ़कर उसने उसी आधार पर परम्परा निभाने के लिए वर्णन कर दिया, जिसे पढ़कर मन में रैवतक की विराटता और निधि–सम्पन्नता की कल्पना तो होती है, उसके सौन्दर्य से हृदय का तादात्म्य नहीं होता। हिमालय के बाद संभवतः यही एक ऐसा पर्वत है, जिसका वर्णन किसी महाकवि ने इतने विस्तार से किया है। इस दृष्टि से इस वर्णन का और भी महत्व है।

सन्दर्भ–सूची

1. ऋक् सूक्तमणिमालाः कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, होरियारपुर, पृ.–3931
2. कुमारसंभव :संपादक, डॉ. गौतम पटेल, भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली।
3. शिशुपाल–वध :श्रीपण्डित हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013
4. संस्कृत–साहित्य चिंतन : चौखम्बा विद्याभवन, दिल्ली।